क्यों मैं ही कहलाती बांझिन

सासु मोरी कहति बांझिनिया,
ननद ब्रजवासिन हो
रामा मितरा के मारी पीटी,
धनिया द्वारे खड़ी रोवे हो।

जिस स्त्री के बच्चा नहीं पैदा होता या लगातार कई लड़कियां पैदा होती हैं, लड़का नहीं पैदा होता तो दोष उसी का माना जाता है। घर के लोग, पड़ोस के लोग शिकवे, तानों के मारे उसका जीना दूभर कर देते हैं।

डाक्टरों का कहना है कि ज़रूरी नहीं कि दोष स्त्री का हो। डाक्टरी जांच के आंकड़ों से साबित हो गया है कि एक चौथाई मामलों में पुरुषों में किसी कमी या दोष की वजह से बच्चा नहीं होता है। आधे मामलों में स्त्रियों में कोई कमी या दोष के कारण बच्चा नहीं होता। एक चौथाई मामलों में दोष दोनों में से किसी एक का हो सकता है या दोनों का। 10 फी सदी मामलों में कोई दोष न होने पर भी कई बार गर्भ नहीं हो पाता है।

बांझपन के कारण

स्त्रियों में बांझपन के कई कारण हो सकते हैं।

1. अंडाणुओं का न बनना।
2. अंडेदानी से बच्चेदानी तक आने वाली नली में कोई रुकावट।
3. बच्चेदानी का बहुत छोटा होना।
4. योनि-द्वार से बच्चेदानी तक जाने वाली नली का मुंह छोटा होना।
5. स्त्री की उम्र तीस-पैंतीस से ऊपर होना।

पुरुषों में बांझपन के कारण:—

1. पैंतालीस वर्ष से ऊपर उम्र।
2. नपुंसकता (कारण शारीरिक और मानसिक दोनों हो सकते हैं)।
3. शरीर में कुछ ऐसे तत्वों का होना जो शुक्राणुओं को पनपने नहीं देते या उनकी प्रजनन शक्ति कम करते हैं।
4. शुक्राणुओं का बहुत कम मात्रा में होना या कमजोर होना।

एक बार में हज़ारों की संख्या में शुक्राणु निकलते हैं परंतु उनमें से कुछ ही योनिद्वार से होकर अंडेदानी के बाहर की नली तक पहुंच पाते हैं।

कुछ कारण स्त्री-पुरुष, दोनों में हो सकते हैं—

1. बहुत ज्यादा मोटापा।
2. काम के कारण बहुत थका होना।
3. घबराहट या मानसिक कमजोरी।
4. मधुमेह की बीमारी।
5. अधिक नशा या धूम्रपान करना।

6. जनन-अंगों में पैदायशी गड़बड़ी या बचपन में हुई बीमारियों जैसे गलगांठ, खसरा व छोटी चेचक आदि के कारण गड़बड़ी।

गुण-सूत्रों का खेल

किसी स्त्री के सिर्फ लड़कियां ही पैदा होने पर अकसर उसे दोष दिया जाता है। लेकिन यह धारणा गलत है। लड़की या लड़का पैदा होना गुण-सूत्रों का खेल है। स्त्रियों के अंडाणुओं में केवल 'एक्स' गुण-सूत्र होते हैं। पुरुषों के शुक्राणुओं में 'एक्स' और 'वाई' दो तरह के गुण-सूत्र होते हैं। स्त्री का 'एक्स' और पुरुष का 'वाई' गुण-सूत्र मिलने पर ही लड़का पैदा होता है।

यदि पुरुष के शुक्राणुओं में 'वाई' गुण-सूत्र है ही नहीं तो लड़का पैदा नहीं होगा। इसे पुरुष का दोष नहीं कहेंगे, कुदरती कमी कहेंगे। स्त्री की तो कमी है ही नहीं। उसे तो कुदरत ने दिए ही 'एक्स-सूत्र' हैं।

इसलिए लड़कियां पैदा करने पर स्त्री को दोष देना सरासर गलत है।

बांझपन के लिए सिर्फ स्त्री को दोषी ठहराना नासमझी और नाइंसाफी है। बांझिन शब्द प्रायः एक कलंक और लांछन की तरह इस्तेमाल किया जाता है। उसका दोष न होने पर भी उसे सताया जाता है। पुरुष भी तो बांझ होते हैं। यह तो एक कुदरती देन है। इसमें किसी को भी दोष देना गलत है।

बच्चा न होने की स्थिति में और भी रास्ते हैं। बच्चा गोद लिया जा सकता है। किसी बेघर या अभावों में पल रहे बच्चे का जीवन सुधर सकता है। □